भजन

तेरी मेहरबानी है हमपे इतनी,
अकेली जुबां से मैं कह न पाऊँ
मेरा रोम रोम जुबां बन के गाए,
सिफत तेरी धनी जी मैं कह न पाऊँ

1– मेरे एक तन पर कोटन धड़ लगे हों,
कोटन मुख में कोटन जुबां बोलती हों
तेरे एक एहसान के बदले में धनी,
मैं अपने को सरभर न पाऊँ
2– मुझे माया के जाल से है निकाला,
त्रैगुण के फंद से है छुड़ाया
तेरे चरणों से है निसवत मेरी,
मैं घड़ी घड़ी पल पल गुण तेरे ग्राऊँ
3– मेरा इस्क ईमान सदा कायम रखना,
फरेबों की दुनिया में जाऊँ भटक न
तुमहीं मेरी आत्म के प्राण प्रीतम,
मैं अंगना हूं तेरी तेरा इश्क पाऊँ